अन्दाज़ -ए- बयाँ

फणीन्द्र भरद्वाज

16LEAVES

अन्दाज़-ए-बयाँ

अन्दाज़-ए-बयाँ

फणीन्द्र भरद्वाज

16LEAVES

पहला संस्करण, 2023

© फणीन्द्र भरद्वाज, 2023

इस प्रकाशन का कोई भी भाग लेखक की पूर्व अनुमति के बिना (संक्षिप्त उद्धरण के मामले को छोड़कर) पुनः प्रस्तुत, फ़ोटोकॉपी सहित किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से वितरित, या प्रसारित, रिकॉर्डिंग, या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक़ तरीके से नहीं किया जा सकता है। आलोचनात्मक समीक्षाओं और कुछ अन्य गैर वाणिज्यिक प्रयगों की कॉपीराइट कानून द्वारा अनुमति है। अनुमति के अनुरोध के लिए प्रकाशक को नीचे दिए गए पते पर लिखें।
यह पुस्तक भारत से केवल प्रकाशकों या अधिकृत आपूर्तिकर्ता द्वारा निर्यात की जा सकती है। यदि इस शर्त का उल्लंघन हुआ तो वह सिविल और आपराधिक अभियोजन के अंतर्गत आएगा ।

पेपरबैक आई एस बी एन: 978-81-19316-53-3
ईबुक आई एस बी एन: 978-81-19316-51-9
वेबपीडीएफ आई एस बी एन: 978-81-19316-52-6

नोट: पुस्तक का संपादन और मुद्रण करते समय उचित सावधानी बरती गई है। अनजाने में हुई गलती की ज़िम्मेदारी न लेखक और न ही प्रकाशक की होगी।

पुस्तक के उपयोग से होने वाली किसी भी प्रत्यक्ष परिणामी या आकस्मिक नुकसान के लिए प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। बाध्यकारी त्रुटि, ग़लत प्रिंट, गुम पृष्ठ, आदि की सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी प्रकाशक की होगी। ख़रीद की एक महीने के भीतर ही पुस्तक का (वही संस्करण/ पुनः मुद्रण) प्रतिस्थापन हो सकेगा।

भारत में मुद्रित और बाध्य

16Leaves
2/579, सिंगरवेलन स्ट्रीट
चिन्ना नीलांकारई
चेन्नई - 600 041
भारत

info@16leaves.com
www.16Leaves.com
कॉल करें: 91-9940638999

प्रिय पाठक

प्रस्तुत पुस्तक का संबंध सिर्फ़ भावनाओं की संवेदना का आदर करना तथा उन्हें संतुष्ट करना है

इस पुस्तक में प्रस्तुत प्रत्येक लेख लेखक के स्वयं के विचार हैं पुस्तक में दी गई प्रत्येक लेखन कवितायें,ग़ज़लें,शायरी,सेर सारी लेखक की अपनी कृति है इस पुस्तक में मौज़ूद प्रत्येक लेखन सामग्री में शब्दों और भावनाओं का विशेष ध्यान दिया गया है अगर फिर भी कोई भूल चूक हो तो हम क्षमां प्रार्थी हैं

इस पुस्तक के माध्यम से हम अपनी भावनायें आपसे साझा करना चाहते हैं हमें उम्मीद है की इस पुस्तक में प्रस्तुत की गयीं शायरी ग़ज़ल आपके दिल में घर बना सके आपको अपना क़ायल बना सके ये कलम मेरी एक लेखक की उम्मीद और क्या होगी पुस्तक पढ़ने के लिए सादर आभार ...

तेरी मुलाक़ातों का सिलसिला
मेरी क़िस्मत में नहीं था
तू जब भी मिला
कभी फ़ुरसत में नहीं था

ज़माने की शराफ़त का सबूत
तो हमें सरेआम दिख रहा है
पैसों के मोहताज इस जमाने में
हर क़िरदार खुलेआम बिक रहा है

कुछ पाने से ज़्यादा कुछ खोने का डर है
कुछ करने से ज़्यादा कुछ होने का डर है
किसी के सपने पिरोने का डर है
किसी की याद में सोने का डर है

एक तलाश थी वो उसकी तलाश में हम खो गये
इक प्यास थी वो जिसकी प्यास में हम खो गये
चले थे ढूँढने ख़ुद का वजूद हम उसकी आँखों में
थोड़े पास क्या गये उसके पास में हम खो गये

सँभाल लेना मुझे और मेरी चाहतों को तुम
बखूबी जानते हो मेरी आदतों को तुम

जो पसंद ही नहीं हम
तो फिर ये परवाह क्यों है
जो ठुकराना ही है हमें तो फिर
पसंद हूँ तुम्हें ये अफ़वाह क्यों है

क़त्ल हुआ मेरी ख़्वाहिशों का
मगर दफ़नाया नहीं गया
वादे हुए वफ़ाओं के
मग़र अपनाया नहीं गया

तंज पे तंज वो क़सते रहे
मेरी हार पे दिल खोल के हस्ते रहे
हमने ही पाले थे कुछ आस्तीन के साँप
जो वक़्त बे-वक्त हमें डंसते रहे

मुझे जो चाहिए था वो बस तुम हो
मग़र तुम भी ना जाने क्यों गुम हो

कर कितनी भी ख़ता तू यहाँ
देखना सब माफ़ हो जाएगी
मगर जो तूने सच बोला यहाँ
तो ये दुनियाँ ख़िलाफ़ हो जाएगी

सब समझते हैं
हम नादान नहीं हैं
ख़ामोश ही हैं हम बेज़ुबान नहीं हैं
और क्यों सताते हो इतना हमें
ज़िंदा हैं हम बेजान नहीं हैं

जब भी जीना चाहा तो
तेरी साज़िशों ने मार दिया
उम्मीदें जब हुईं जीने की
तो कमबख़्त ख़्वाहिशों ने मार दिया

इश्क़ को ख़ता कहूँ
या है ये इनाम कोई
इश्क़ को मुक़ाम कहूँ
या है ये इल्ज़ाम कोई
इश्क़ को इबादत कहूँ
या है ये पैग़ाम कोई
इश्क़ को गुमनाम कहूँ
या है ये सरेआम कोई

तनहाइयों में मुझे तुम
मिले हो इस तरह
डूबते को नाव
मिली हो जिस तरह
कैसे कहूँ तुम
मिले हो किस तरह
कड़कती धूप में
छाँव मिली हो जिस तरह

आज जा रहे हो बर्बाद कर के
देखना कल हमें याद करोगे
इस क़दर होगा अफ़सोस
की मिलने की फ़रियाद करोगे
माना मिल जाएगा
कोई हमसे भी बेहतर तुम्हे
वो ठुकरायेगा जब
तो उसके बाद करोगे

मिला था मौक़ा हमें निखरने का
ख़ुद हमने चुना था रस्ता बिखरने का

मंज़िलों की तलाश में हम सफ़र छोड़ आये थे
महफ़िलों की तलाश में हम घर छोड़ आये थे
इक वो था जिसकी वज़ह से वहाँ थे
वरना उसके बाद तो हम वो शहर छोड़ आये थे

ये दिल ही तो है जो मान नहीं रहा है
मोहब्बत में साज़िशें पहचान नहीं रहा है
लुट रहा है इश्क़ में लुटेरों के हाथों मगर
ये नासमझ है इतना की जान नहीं रहा है

मन के मंदिर में तुम्हारी ही मूरत है
करूँ जो इबादत तो तुम्हारी ज़रूरत है
आँखें भी तुम्हें अपनी पलकों में रखतीं हैं
ख़्वाबों में अक्सर तुम्हारी ही सूरत है

देखना इक रोज़ इतने ख़ास बन जाएँगे
की ढूँढते फिरोगे तुम
हम एक तलाश बन जाएँगे
करते रहो हम से इश्क़ में जफ़ा
फिर अफ़सोस भी ना करना
जब एक लाश बन जाएँगे

आहिस्ता आहिस्ता
हम ही दूर हो जाएँगे
जो करोगे ज्यादत तो
मज़बूर हो जाएँगे
मत ढूँढो तरीक़े
हमें तोड़ने के साहब
हम तो ख़ुद ही टूट के
चूर हो जाएँगे

कितनों को जीने की वज़ह दी है
तो कितनो को मौत बेवजह दी है
कितनों की ख़ुशियाँ सजा दी हैं
तो कितनो को सजा बेवजह दी है

बड़े नज़दीक होते हैं
वो दिल में
जिनसे प्यार हो जाता है
शिकायतें भी कहाँ होतीं हैं उनसे

जब बेहद एतवार हो जाता है
सुना है ख़ुदा को भी
भूल जाते हैं लोग
जब प्यार बेशुमार हो जाता है

किसी को किसी के साथ देख कर
फिर रोया हूँ अपने हालात देख कर

होश ही ना खो दें कहीं
तुम्हें पाने के बाद में
तभी तो जीते हैं हम
तुम्हारी बस याद में

कैसे कहोगे की वो सब एक अफ़वाह थी
मेरी आँखें ही जब एक गवाह थीं

इन ठोकरों का मुझे इंतक़ाम चाहिए
हारा नहीं हूँ मुझे तो मुक़ाम चाहिए

तुझे भी कहाँ पसंद आया मैं
बस वो झूठी तसल्ली थी
जो समझ ना पाया मैं

बड़े फ़ासले रहे हैं बड़ी मज़बूरी रही है
ठुकराया उसने है जो सबसे जरूरी रही है

उसे खोने की हिम्मत की है जिसे पाने में जमाने लगे
इतंज़ार था जिसका वो आया नहीं
यूँ तो हज़ारो ज़िंदगी में आने लगे

बिखरी रातों को मैं सपनों से सजाता हूँ
कहीं टूट ना जायें ये तभी अपनों से बचाता हूँ
लोग हक़ीक़त में ज़िन्दगी जीते हैं
मग़र मैं मेरी दुनियाँ तो सपनों में बनाता हूँ
ख़ुद से रूठता हूँ और ख़ुद को मनाता हूँ

काश क़ैद हो जातीं वो यादें पुरानी
तो आँखों से मेरे ना बहता ये पानी

जकड़ कर रखा है ज़ंजीरों ने
पकड़ कर रखा है तक़दीरों ने
यूँ तो नहीं आती
मुझे जमाने की बातें
मग़र सीखता रहता हूँ
अक्सर मैं फ़क़ीरों से

भुला दो हमें ना करो याद
तो भी मंज़ूर है
या जकड़ लो ज़ंजीरों में
ना करो आज़ाद
वो भी मंज़ूर है
कर दो आबाद
या कर दो बर्बाद
वो मुझे भी मंज़ूर है
क्योंकि इश्क़ में
बर्बाद होना भी दस्तूर है